प्रसन्नता सबसे बड़ी औषधि है

घोटालेबाजों पर शिकंजा

घोटाले कर विदेश भागने वालों के खिलाफ केंद्रीय कैबिनेट ने एक ओर जहां एक ऐसे विधेयक के मसौदे को मंजूरी दी जो भगोड़ों की संपत्ति जब्त करने में सहायक बनेगा वहीं फाइनेंशियल रिपोर्टिंग अथॉरिटी के गठन का भी रास्ता साफ किया। यह निकाय चार्टर्ड अकाउंटेंट के साथ-साथ ऑडिट कंपनियों के कामकाज पर भी निगरानी रखेगा। ऑडिट कंपनियों के निराशाजनक रवैये के बाद ऐसे किसी निकाय की आवश्यकता और बढ़ गई थी। ऑडिट कंपनियां चाहे जो सफाई दें, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि वित्तीय धांधली रोकने के मामले में उनकी भूमिका बहुत ही दयनीय रही है। बेहतर हो कि ये शिकवा-शिकायत करने के बजाय अपनी कमजोरियों पर गौर करें। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार की ओर से उठाए गए ताजा कदम घोटालेबाजों के मंसूबों पर पानी फेरने का काम करेंगे। अच्छा होता कि ये कदम पहले ही उठा लिए जाते, क्योंकि घोटालेबाजों के विदेश भागने का सिलसिला एक अर्से से कायम है। बेहतर हो कि केंद्र सरकार के नीति-नियंता यह देखें कि घोटालेबाजों और साथ ही उनकी मदद करने वालों के खिलाफ और क्या कदम उठाने की जरूरत है, क्योंकि अभी तो ऐसा लगता है कि नियामक एवं निगरानी तंत्र डाल-डाल है तो भ्रष्ट तत्व पात-पात। निःसंदेह यह भी देखने की जरूरत है कि आर्थिक अपराधी अदालती प्रक्रिया का बेजा इस्तेमाल करने में समर्थ न रहें। अदालतों के लिए यह आवश्यक है कि वे आर्थिक अपराधियों पर शिकंजा कसने में सख्ती बरतें। पता नहीं इस पर पहल किस स्तर पर होगी, लेकिन यह अजीब है कि जब न्यायपालिका यह चाह रही है कि लोकपाल का गठन जल्द हो तब कांग्रेस ने उसमें अड़ंगा लगाने का काम किया।

लोकसभा में कांग्रेस के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने लोकपाल की नियुक्ति के लिए चयन समिति की बैठक में जाने के बजाय जिस तरह प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखकर अपना असंतोष प्रकट करने में दिलचस्पी दिखाई उससे यही लगता है कि उनका उद्देश्य इस मसले पर सियासत करने का अधिक था। उन्होंने बैठक में शामिल हुए बिना ही यह निष्कर्ष निकाल लिया कि सरकार विपक्ष की आवाज खारिज करने की साझा कोशिश कर रही है। क्या वह यह कहना चाह रहे हैं कि इस कोशिश में लोकसभा अध्यक्ष के साथ सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भी शामिल हैं? पता नहीं वह क्या इंगित करना चाहते हैं, लेकिन यह ठीक नहीं कि जब लोकपाल के गठन में पहले ही देरी हो रही है तो उन्होंने और देर करने वाला बहाना पेश करना ठीक समझा। क्या यह अच्छा नहीं होता कि वह उक्त बैठक में शामिल होते और अपनी सहमति या असहमति बाद में व्यक्त करते? आखिर वह बैठक में गए बिना इस नतीजे पर कैसे पहुंच गए कि लोकपाल चयन प्रक्रिया से विपक्ष को अलग करने की कोशिश हो रही है? ऐसा लगता है कि कांग्रेस लोकसभा में नेता विपक्ष का दर्जा न मिलने से परेशान है, लेकिन क्या वह परिपाटी उसने ही नहीं बनाई कि संख्याबल के अभाव में सबसे बड़े विपक्षी दल को नेता प्रतिपक्ष का पद नहीं मिलेगा? अगर कांग्रेस लोकपाल गठन को लेकर गंभीर है तो उसे असहयोग करने वाले रवैये को छोड़ना चाहिए।

सौहार्द की पहल

होली का पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत है। यह महज मौज-मस्ती व मनोरंजन ही नहीं अध्यात्म, प्रेम और भाईचारे का भी त्योहार है। इसका शाश्वत संदेश मौज-मस्ती से परिपूर्ण है। वास्तव में मानव समुदाय अपने समस्त दुःखों, उलझनों एवं संतापों को भुलाकर ही इस त्योहार को उसकी संपूर्णता के साथ मना सकता है। लखनऊ, अलीगढ़ और बरेली शहर के मुफ्तियों ने बड़ी पहल करते हुए होली पर जुमे की नमाज के समय में बदलाव किया है। अब एक के बजाय डेढ़ बजे नमाज अदा की जाएंगी। ऐसा होली के चलते किया गया है, ताकि होली और नमाज शांति पूर्वक हो सके। अलीगढ़ की दो मस्जिदें मिश्रित आबादी में हैं। होरियारों की भीड़ इन मस्जिदों के आसपास भी रहती है। ऐसे में मस्जिदों में नमाज का समय आगे बढ़ाकर जिस समझदारी का परिचय दिया गया है, वह स्तुत्य है। कुछ ऐसा ही निर्णय लखनऊ के बड़े उलमा ने भी किया है। लखनऊ में शिया और सुन्नी, दोनों समुदायों के शीर्ष धर्मगुरुओं ने एक बजे के बाद नमाज अदा कराने की अपील की है। वस्तुतः इस प्रकार की सुंदर पहल परस्पर सौहार्द बढ़ाने के साथ ही अप्रिय विवादों से मुक्ति भी दिला देती है। हमें इस तथ्य को ध्यान रखना होगा कि होली प्रेम और सद्भावना का त्योहार है। कुछ असामाजिक तत्व प्रायः कुत्सित भावनाओं से इसे दूषित करने की चेष्टा करते हैं। हमें ऐसे असामाजिक तत्वों से सावधान रहना चाहिए। आवश्यकता है कि हम सभी एकजुट हो इसका विरोध करें ताकि होली की पवित्रता नष्ट न होने पाए।

इस प्रकार की सुंदर पहल परस्पर सौहार्द बढ़ाने के साथ ही अप्रिय विवादों से मुक्ति भी दिला देती है

कह के रहेंगे माधव जोशी

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या पचास करोड़ रुपये से अधिक के फंसे कर्जों की जांच से बैंकों के एनपीए की समस्या का कुछ समाधान निकलेगा?

आज का सवाल

क्या तीसरी तिमाही में 7.2 फीसद की विकास दर अर्थव्यवस्था में व्यापक सुधार का संकेत है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y –हां, **N**–नहीं, **C**–कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।
सभी आंकड़े प्रतिशत में।

साझा चिंतन के साथ सहज विकास

एनके सिंह

गांधी एवं आंबेडकर के साथ लोहिया और दीनदयाल के विचारों में जो साम्य है वह देश की समस्याओं के समाधान का एक बड़ा आधार है

संविधान लगभग बन कर तैयार हो चुका था कि अचानक गांधी जी के निकटतम सहयोगियों में एक श्रीमन्नारायण ने संविधान निर्माताओं से पूछा, 'इस पूरे संविधान में गांधी की ग्रामसमाज की अवधारणा की चर्चा कहां पर है?' इसके बाद आनन-फानन में उसे राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में अनुच्छेद 40 के रूप में जोड़ा गया। यह अलग बात है कि इस अवधारणा पर अमल अगले 42 साल तक नहीं किया गया। पहली बार 1992 में पंचायत राज एक्ट 73 वें संविधान संशोधन के तहत लाया गया और ग्राम पंचायतों को अधिकार मिले। संविधान की प्रस्तावना में आर्थिक न्याय और अवसर की समानता की बात है, परंतु 70 साल में गरीब-अमीर के बीच खाई बढ़ती गई है। तमाम संस्थाओं के ताजा अध्ययन यह बता रहे हैं कि भारत में गरीब-अमीर के बीच फासला बढ़ता जा रहा है। हाल के एक अध्ययन के अनुसार देश में 101 अरबपतियों की संपत्ति बढ़कर कुल जीडीपी का 15 प्रतिशत हो गई है जो पांच साल पहले 10 प्रतिशत और 13 साल पहले पांच प्रतिशत हुआ करती थी। 1988 से सन 2011 के बीच जहां सबसे नीचे तबके के 10 प्रतिशत गरीबों की संपत्ति 200 रुपये से भी कम बढ़ी है वहीं शीर्ष एक प्रतिशत की 182 गुना। आज की आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था में क्या हम संविधान में दी गई प्रतिबद्धता के आसपास भी पहुंच रहे हैं? समाज सरंचना की विदेशी अवधारणा पर आधारित व्यवस्था के लगभग सभी दोष अब सामने आ चुके हैं और आज जरूरत एक नई मौलिक सोच की है। यह मौलिक सोच दिखी राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाल के एक संबोधन में।

राष्ट्रपति ने बीते माह 11 फरवरी को ग्वालियर में डॉ. लोहिया स्मृति व्याख्यान में लगभग इसी बात को एक बार फिर ध्वनित किया। उनका कहना था, 'ऐसा लगता है कि संसद से सड़क तक समाज के अंतिम व्यक्ति के हक में जन-चेतना की मशाल जलाने वाले डॉक्टर लोहिया संभवतः सामाजिक विषमताओं और शोषण की राजनीति को चुनौती देने के लिए ही पैदा हुए थे। ...अपनी विचारधाराओं के आधारभूत तत्व को ग्रहण करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति के हित में काम करने की भावना के विभिन्न रूप महात्मा गांधी, डॉ. आंबेडकर, लोहिया और दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन और संघर्ष में देखने को मिलते हैं। इन सभी विभूतियों ने देश की समस्याओं के एकांगी और विशेष समाधानों की जगह समग्र और जमीनी सुधारों पर जोर दिया। उनके रास्ते भले ही अलग-अलग थे, लेकिन उन सभी का एक ही उद्देश्य था- भारत के लोगों को विशेषकर पिछड़े लोगों को बराबरी और सम्मान का हक दिलाना।' भाजपा के तत्कालीन अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने भी अपने एक अध्यक्षीय भाषण में कहा था, 'शासन प्रकिया चलाने में काफी हद तक विचारधारा की कोई भूमिका नहीं होती। आदर्श (आइडियल) और विचारधारा (आइडियोलॉजी) में अंतर होता है। हो सकता है कि कम्युनिस्टों और भारतीय जनता पार्टी के लोगों की विचारधारा अलग-अलग हो,

अवधेश राजपूत

लेकिन दोनों का गंतव्य याने आइडियल एक ही है।' जरा व्यावहारिक धरातल पर इन महापुरुषों के आदर्शों पर गौर करें जिनकी चर्चा राष्ट्रपति ने इस आशय से की कि इनकी समेकित सोच एक नया रास्ता देगी। एक ऐसे समय में जब गरीब-अमीर की खाई लगातार बढ़ रही हो, समाज में अभावग्रस्त एक बड़ा तबका अवसर की समानता न मिलने से अपनी योग्यता नहीं दिखा पा रहा हो तब शायद आज नीति निर्धारण में इन सभी महापुरुषों की विचारधारा में एक सामंजस्य बैठाना ही सबसे सही रास्ता होगा। इन महापुरुषों के मूल विचारों में साम्य भी देखें। लोहिया के नारे थे- 'राजा पूत निर्धन संतान, सबकी शिक्षा एक समान' या फिर 'जो जमीन को जोते बोवे, वही जमीन का मालिक होवे।'

संघ परिवार के दिग्दर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भी अपने चार बीज भाषणों में से अंतिम में कहा था, 'भगवान की सर्वश्रेष्ठ कृति मानव अपने को खोता जा रहा है ... हमारी अर्थव्यवस्था का उद्देश्य होना चाहिए प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम जीवन स्तर की आश्वस्ति.... प्रत्येक वयस्क और स्वस्थ व्यक्ति को साभिप्राय जीविका का अवसर देना। गांधी का ट्रस्टीशिप का सिद्धांत और डॉ.आंबेडकर के समतामूलक समाज की अवधारणा-ये सभी एक ही दिशा में इंगित करते हैं।' पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद का सिद्धांत देते हुए यह भी रेखांकित किया था, 'विविधता में एकता अथवा एकता का विविध रूपों में व्यक्तिकरण ही भारतीय संस्कृति का केंद्रस्थ विचार है। यदि इस तथ्य को हमने हृदयंगम कर लिया तो विभिन्न सत्ताओं के बीच संघर्ष नहीं रहेगा। यदि संघर्ष है तो वह प्रकृति का अथवा संस्कृति का द्योतक नहीं, विकृति का द्योतक है। देखने को तो जीवन में भाई-भाई के बीच प्रेम और बैर दोनों मिलते हैं, किंतु हम प्रेम को अच्छा मानते हैं। बंधु-भाव का विस्तार हमारा लक्ष्य रहता है। अर्थात विचारधारा यानी रास्ते चाहे जैसे हों, गंतव्य या आदर्श) एक ही है।'

आज यह जानने की आवश्यकता है कि आरएसएस के नानाजी देशमुख ने समाजवाद के प्रणेता और धुर समाजवादी चिंतक डॉ. लोहिया को 1963 में संघ के शिविर में आने का न्योता भेजा था। उन्होंने यह न्योता स्वीकार भी किया। शिविर से बाहर निकलने पर लोहिया से पत्रकारों ने उनके आने का कारण पूछा तो लोहिया का जवाब था, मैं इन संन्यासियों को गृहस्थ बनाने गया था। इसके कुछ ही महीने बाद 12 अप्रैल, 1964 को लोहिया और दीनदयाल उपाध्याय ने एक साझा बयान जारी किया। इस बयान ने तत्कालीन राजनीतिक विश्लेषकों के साथ पूरे देश को चौंकाया। इसके उपरांत दो-तीन वर्ष विचारधारा के स्तर पर उत्तर और दक्षिण ध्रुव माने जाने वाले नेताओं में गजब सामंजस्य रहा और यहां तक कि जौनपुर के उपचुनाव में लोहिया ने पंडित जी के लिए प्रचार किया और यहीं से बजा कांग्रेस के एकल दल वर्चस्व के अवसान का बिगुल। 1967 के चुनाव में देश के दस राज्यों में संविद सरकारें बनीं। तब कहा जाता था कि जीटी रोड से यात्रा करते हुए अमृतसर से कलकत्ता तक बगैर किसी कांग्रेस शासन वाले राज्य से गुजरे पहुंचा जा सकता है।

शायद राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इन तथ्यों के मद्देनजर ही कि पिछले 70 सालों में गरीब-अमीर के बीच की खाई बढ़ती जा रही है और गरीबों के कल्याण लिए अपेक्षित प्रयास नहीं हुए हैं, एक नए प्रयास पर बल देने की कोशिश की है। उन्होंने यह रेखांकित किया कि इन महापुरुषों के कथन को आप्तवचन मानते हुए नीति-निर्धारण के मूल में गरीबों का कल्याण रखा जाए और ऐसा करने में यह न देखा जाए कि रास्ता समाजवाद की ओर से जाता है या पूंजीवाद की ओर से या वह अवधारणा किस व्यक्ति की है या वह किस विचारधारा का प्रतिपादक रहा है। 70 साल बाद भी अमीर-गरीब के बीच की बढ़ती खाई यही बताती है कि हम न तो संविधान की प्रस्तावना में किए गए वादे पर खरे उतरे और न ही गांधी जी के सपनों का असली प्रजातंत्र ला पाए। शायद यही राष्ट्रपति का दर्द था और इसीलिए उन्होंने डॉ. लोहिया का स्मरण करते हुए एक नई राह की ओर संकेत किया।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं ब्रॉडकास्ट एडिटर्स एसोसिएशन के सदस्य हैं)

response@jagran.com

मन मधुर करने का रंगमय उत्सव

परिचय दास

रंगों का अर्थ केवल दिखने वाले विविध रंगों से ही नहीं है। असल में वे हमारे चित्त और मन के आयाम हैं

होली हमारे समय को आल्हाद से भर देती है। यह पर्व नए तरह के वातावरण का सृजन करता है- स्नेहिल, गंधभरा, पुनर्नवा सा। होली कहती है कि अभी और पुनर्नवीकरण होना चाहिए हमारे संबधों में, मुरझाते फूलों में, प्रेम के लड़खड़ाते प्रसंगों में, सामाजिकता में, सामूहिकता में-सबमें गति आनी चाहिए। सबका गतिशास्त्र बदलना चाहिए। सभी फूलें, फलें। सबका विकास हो। किसी एक का दूसरे पर आधिपत्य न हो। होली यही कहती है। वह सबसे निचले आदमी को भी वाणी देती है। यही उसकी उत्सवधर्मिता है। वह भविष्य के रंगों का नया सौंदर्यशास्त्र गढ़ती है। यह सृजनशील मन के संवेदन को झकझोरने की कला है। विचारधाराएं कई बार रूढ़ हो जाती हैं। तर्क कई बार शुष्क हो जाते हैं। बौद्धिकताएं अनेक बार दूसरों से अलगीकृत हो जाती हैं, परंतु हमारा मन दूसरों के लिए उत्सुक, खुला और जुड़े रहने के लिए अभीप्सित रहता है, उसमें राग और रंग होता है, उसमें संगीत होता है। यही संगीत होली में मादकता लाता है। यही नृत्य होली को लयबद्ध और रसमय बनाता है। साल भर की थकान जोगीरा गाते उतरती है। होली अपना मुहावरा स्वयं बनाती है। इसीलिए होली सामंजस्य का हेतु है। जब तक संसार में सामंजस्य और लोकतांत्रिक संवाद है, होली हमें रंगों की आभा से दीप्त करती रहेगी। होली का अर्थ खास आदमी और आम आदमी, बड़े और छोटे, गर्मी और सर्दी, गाढ़े और तरल रंग का भेद मिटाना है। वर्ण, जाति, संप्रदाय, क्षेत्र, भाषा, कुल, पद आदि के अंतर को यह या तो समाप्त करती है या न्यूनीकृत अंतर पर ला देती है। जिस उपक्रम से मनुष्य से मनुष्य की निकटता बढ़े और उसके अंतर कम होते जाएं वही वास्तविक उत्सव है। होली का उत्सव यह काम बड़ी ही खूबसूरती से करता है।

भावात्मकता और सकारात्मकता ही दुनिया को उत्सवधर्मी बना सकती है। हमारे बीच पारदर्शी संवाद बने रहना रंगों की झिलमिल आत्मा है। शायद इसीलिए लोग कहते हैं कि वर्ष भर में यह पर्व आया है आओ इस अवसर पर बिगड़े संबंध भी सुधार लें। आज की दुनिया इतनी जटिल हो गई है कि मानव मन की अंतरंगता को समझ पाना दुर्लभ हो गया है। फिर भी ध्यान दें तो तमाम जटिलता के बावजूद कोई कोना ऐसा जरूर होता है जहां आपके लिए कोमल जगह मिल ही जाती है। यह बुद्धि के यथार्थ में भावना का मिश्रण है। जैसे कोई आधुनिकता परंपरा के प्रवाह से आती है, जैसे हमारा समकाल पूर्व के क्षणों का अगला चरण है, वैसे ही हमारे भीतर-बाहर के रंगों का उत्साह उत्सव रूप में होली है। रंगों का अर्थ केवल दिखने वाले विविध रंगों से ही नहीं है। वे हमारे चित्त और मन के आयाम हैं, बहुविध दिशाओं में पतंग की तरह उड़ने वाले।

आकाश असीम है तो मन की पतंग भी उसी असीम का हिस्सा है। होली उसी असीमता के अछोर संसार को दर्शाती है। रंगों का सत्य अनंत है। वास्तव में सत्य अनंत है। उसकी अनंत छटाएं हैं। रंग आप पर चढ़ता ही इसलिए है, क्योंकि आपमें यथार्थ की सृजनात्मक अनुभूति की गहन क्षमता है। साधारण-सा दिखने वाला रंग प्रेम-प्रीति की कितनी गहरी छाप छोड़ जाता है, कहा नहीं जा सकता। उसे चाहने वाले न पाने पर कितनी टीस का अनुभव करते हैं, यह भी वर्णनीय नहीं।

होली का मूलाधार सत्य की संस्थापना रही है। असत्य पर आधारित हिरण्यकश्यप को सही मार्ग दिखाने का पर्व। होली ही जल गई। प्रहलाद निखरकर सामने आ गए। प्रहलाद का सत्याग्रह पूरे विश्व में सत्य के संकल्प का सौंदर्यमय आधार है। महात्मा गांधी ने भी इसी से प्रेरणा ली थी। सत्य का कोई एक रूप नहीं। सत्य की कोई एक दिशा भी नहीं। एक समय में आवश्यक नहीं कि एक ही सत्य हो। यह अच्छी बात भी है कि सत्य के अनेक आयाम हों, अनेक कोण हों, अनेक आधार हों। बहुवचनात्मकता पल्लवित ही होनी चाहिए। लोकतांत्रिक समाजों में उन्हें चिह्नित कर लिया जाना चाहिए जो अपने मन की चाहती हैं। भाषा, भूषा, विचार, खानपान, स्वाधीनता, सबमें बहुआयामिता होनी चाहिए। होली के विविध रंग इसी ओर इशारा करते हैं। कई बार हमारा समकाल हमारे ऊपर बहुत प्रभावी हो जाता है और हम अपनी परंपरा के रस से सूखने लगते हैं। परंपरागत और पुनर्जागरण के विचारों और जीवन-दृष्टिकोणों की अस्वीकृति के कारण विश्वास का संकट उपस्थित हुआ है। हमें अपने और अपने समाजों में अटूट विश्वास पैदा करना है। पर्वों का एक लक्ष्य यह भी है। होली हममें विश्वास पैदा करती है कि हम एक-दूसरे से जुड़े हैं, चाहे जितना अलग या पृथक दिखते हों। हमें यह समझना होगा कि तकनीक ने मनुष्य का जीवन बेहतर बनाया है। मशीन को कोसने से काम नहीं चलेगा। सोचिए यदि आज की तकनीक नहीं होती तो हम कितने पीछे और पिछड़े होते। विज्ञान ने हमारा स्पेस और बढ़ाया है। विज्ञान ने संस्कृति, कला, साहित्य सबके बारे में हमारी तार्किकता और भावनात्मकता को मिश्रित किया है। हमको वस्तुनिष्ठ दृष्टि दी है। महत्वपूर्ण यह है कि मशीन या तकनीक हमारे रंगों, उत्सवों को नियंत्रित न करने लगे। इसे हावी नहीं होने देना है। अन्यथा मनुष्य यंत्रीकृत होता चला जाएगा।

होली में देवर-भाभी, सास-ससुर-बहू, पिता-पुत्र, मां-बेटी, पति-पत्नी सारे संबंधों में विस्तार होता है। इसमें अनपेक्षित छूट भी मिलती है। समाज के व्यवस्थाकारों ने शिथिलता का प्रावधान इसीलिए किया कि हम जीवन को एकरस न रहने दें, उसे पूर्ण रसमय बनाएं। ऐसी शिथिलता व्यवस्थाकारों ने किसी दूसरे उत्सव को नहीं दी। होली के अवसर पर खाने-पकाने और खिलाने का ऐसा स्वरूप बनता है जो वर्षभर स्मृति में रहता है। भूलता नहीं। वह केवल खाने-पीने का निमित्त नहीं। वह सहभाव है इसीलिए विस्मृत नहीं होता। भारतीय समाज ने अनेक पर्व रखे, जिससे उसके जीवन की गतिशीलता और रंग बना रहे। होली प्रकारांतर से समूचे भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय और सबका पर्व है। गुलाल मलते हुए अपने हृदय और मन को लोग दूसरों से जोड़ देते हैं। रंग डालते हुए सामने वाले का मुंह और मन मीठा कर देते हैं। मन मधुर करने की रंगमय कला होली है। होली सृजनात्मकता का ऐसा कक्ष है, जिससे संबंधों का मुक्त संसार और संयुक्त संसार एक साथ दिखाई देता है। सामाजिक प्रक्रिया में जुड़ाव और रंगमय क्रियाकलाप में हमारी निमग्नता ही होली को मीठा बना देती है।

(लेखक साहित्यकार एवं दिल्ली हिंदी अकादमी के पूर्व सचिव हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

यात्रा

मन की यात्रा अधूरी ही होती है। वैसे तो आदमी जीता पूरा है और पूरी तरह से जीने का प्रयास करता है, पर वह जी नहीं पाता। ऐसा इसलिए, क्योंकि वह जीने के लिए प्रयास करता है। उन प्रयासों में वह कुछ संभावनाओं में डूबकर जीता है। कुछ कल्पनाओं में डूबकर जीता है। और कभी-कभी स्वप्न में इस तरह खोकर जीता है, जैसे उसका यही सत्य है। यही जीवन है। आदमी का यह मन ही तो है। मन जो मान लेता है, उसी की यात्रा करने लगता है। उसी के नशे में डूबकर कुछ समय काट लेता है। मन सभी चीजों को स्वीकार कर लेता है। मन सभी तरह की बातों को बर्दाश्त कर लेता है। वह केवल अपना रास्ता खोजता रहता है। वह खाने में, पीने में, सोने-जागने में भी अपना प्रभाव रखता है। इसलिए आदमी पूरी तरह से सो भी नहीं पाता। सोकर भी वह स्वप्न में खो जाता है। सोकर वह यात्राएं करने लगता है। स्वप्न में ही उठकर चलने लगता है। स्वप्न में ही मन के भटकाव को मुक्ति देने का प्रयास करता है और कभी-कभी तो सो भी नहीं पाता। पूरी रात स्वप्नों में ही गुजार देता है।

वैसे तो मनुष्य पूरी व्यवस्थाओं के साथ जन्म लेता है। जब वह जन्म लेता है तो मां के स्तन में दूध आ जाता है और प्रेम के अनुग्रह का अथाह सागर उसके लिए उमड़ पड़ता है, पर जैसे-जैसे उसकी दुनिया बढ़ती जाती है। वह अपने जीवन के प्रश्नों के समाधान में उलझ जाता है। आदमी की मांग बढ़ती जाती है। प्रश्नों का चक्रव्यूह बढ़ता जाता है। चाहतें बढ़ने लगती हैं। समाधान की खोज में यात्राएं होती रहती हैं। किसी स्थूल यात्रा को वह पूरा कर लौट आता है। तो किसी में उलझ कर छोड़ आता है। आदमी के प्रश्न भी अनेक तरह के हैं और समाधान के मार्ग भी भिन्न तरह के हो जाते हैं। आदमी की कई तरह की चाहतें हैं। अनेक तरह से प्रेम करता है। कोई प्रेमिका के प्रेम में या किसी प्रेमी के प्रेम में खोकर अपना स्वर्ग समझ लेता है। इसी को अपनी जिंदगी समझ लेता है। तो कोई धन से प्यार करता है, कोई पद प्रतिष्ठा से तो कोई कला से प्रेम करने लगता है। इस प्रकार मन के कहने पर वह हर काम करता है, लेकिन बाद में उसे यह अहसास होता है कि मन के कहने पर वह जो भी करता है, अंततः हाथ कुछ नहीं आता। मन की नीरसता व रिक्तता दूर नहीं होती। यह रिक्तता तो ध्यान से ईश्वर की शरण में जाने से ही पूरी हो सकती है।

महायोगी पायलट बाबा

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

अमेरिका के भरोसे न रहें

आसानी से नहीं सुधरेगा पाकिस्तान शीर्षक लेख तहत विवेक काटजू ने फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स यानी एफएटीएफ की बैठक में अमेरिका के पाकिस्तान के प्रति रुख पर अपना विचार रखा। अगर किसी देश को बर्बाद करना हो तो उसको आर्थिक आधार पर कमजोर करना बहुत जरूरी होता है। पाकिस्तान को सुधारने के लिए अक्सर यही कहा जाता है कि यह आसानी से नहीं सुधर सकता, लेकिन पाकिस्तान आसानी से क्यों नही सुधर सकता है? अगर वह आसानी से अपने देश में आतंकवाद का पालन पोषण कर सकता है, तो क्या सारी दुनिया विश्वव्यापी समस्या आतंकवाद के पनाहगार को सबक सिखाने के लिए एकजुट नही हो सकती? अगर दुनिया के सभी देश उससे तब तक सारे रिश्ते खत्म कर लें तो जो देश उसके हमदर्द बनकर, खासतौर पर चीन और अमेरिका उसकी आर्थिक मदद कर बंद कर दें तो नापाक पाकिस्तान आर्थिक तंगी कारण खुद ब खुद बर्बाद हो जाएगा। पाकिस्तान को बिगाड़ने वाला भी अमेरिका ही है। अमेरिका पाकिस्तान को लेकर हमेशा दोहरा रवैया अपनाता आया है। अगर अमेरिका ने आतंकवाद के पालक पाकिस्तान को सुधारने के प्रति नियत साफ रखी होती तो वह पाकिस्तान में पनाह लिए आतंकवाद को उसी तरह उखाड फेंकता जैसे लादेन को। भारत को भी पाकिस्तान को सुधारने के लिए ढुलमुल रवैया छोड़ देना चाहिए, और अमेरिका से तो उम्मीद ही नही रखनी चाहिए कि वह पाकिस्तान को कभी सुधारेगा, क्योंकि पाकिस्तान के साथ अमेरिका के बहुत सारे हित जुड़े हुए हैं। ऐसे में एफएटीएफ के मसले पर भले ही अमेरिका पाकिस्तान पर दबाव बढ़ा रहो हो, लेकिन उसके भरोसे बैठना उचित नहीं होगा।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

बैंको को चूना

आज देश के हालात इस प्रकार हो चुके हैं कि किसी भी इंसान को यह नहीं पता कि उसका पैसा कब तक बैंक में सुरक्षित है। कभी ललित मोदी तो कभी विजय माल्या या फिर नीरव मोदी जैसे लोग देश का पैसा लेकर कब विदेश भाग जाएं कुछ नही पता। ऐसे लोगों के खिलाफ कोई कार्रवाई भी नहीं हो पा रही है। पीएनबी घोटाले में आरोपित नीरव मोदी तो उल्टे बैंक को ही घुड़की दे रहा है। एक बैंक घोटाले का मामला सुलझ नहीं रहा तभी दूसरा सामने आ जाता है। पता ही नहीं चल रहा है कि इन घोटालेबाजों ने बैंको को कितना चूना लगा रखा है।

मोहम्मद अली, दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म

शहीदों का सम्मान

सांसद असदुद्दीन ओवैसी का शहीद सैनिको को लेकर दिया गया बयान सेना को धर्म की गंदी राजनीति में बांटने का कुत्सित प्रयास है। अपने राजनीतिक फायदे के लिए सैनिकों पर ऐसा बयान देना घोर निंदनीय है। नेताओं को सेना पर बोलने से पहले यह ध्यान रखना चाहिए कि सैनिक या शहीद का कोई धर्म नहीं होता। ऐसे नेताओं को चुनाव में सबक सिखाकर शहीदों का सम्मान करना सिखा देना चाहिए।

युधिष्ठिर लाल कक्कड़, गुरुग्राम

वैदिक ग्रंथों में विज्ञान

वैदिक काल के भारत का इतिहास आश्चर्यचकित कर देने वाले ज्ञान से भरा हुआ है। प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक भास्कराचार्य एवं आर्यभट्ट को ग्रह नक्षत्र के विषय में संपूर्ण ज्ञान था। शून्य की खोज भी आर्यभट्ट ने की थी। विश्व को दशमलव भारत की ही देन थी। वास्तव में हमारे वैदिक ग्रंथों में विज्ञान का अनंत भंडार है। हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा अब सभी वैदिक तथ्यों को डिजिटल रूप में एक वेब पोर्टल पर संरक्षित करने की योजना है। निश्चित रूप से यह भारतीयों का आत्मविश्वास मजबूत करने में बड़ी भूमिका अदा करेगी।

शुभांशु सिंह, गाजियाबाद

पाक की नई चाल

एक बार फिर पाकिस्तान आंतकवाद और बातचीत की पेशकश साथ लेकर आगे बढता हुआ दिख रहा है। जिस तरह से तालिबान अफगानिस्तान में शांति के लिए अमेरिका से बातचीत करने के लिए आतुर नजर आ रहा है उसमें कहीं न कहीं पाकिस्तानी कूटनीतिक चाल से इनकार नहीं किया जा सकता है। एक ओर तालिबान ने अफगानिस्तान में आंतकी हमले तेज कर दिए हैं वहीं दूसरी ओर सुलह की बात कर रहा है। जबसे पाकिस्तान को आंतकवाद वित्त पोषण करने वाले निगरानी तंत्र की सूची में डाला गया है, वह तालिबान को बातचीत की मेज पर आगे बढाकर अपने कई हित साधने की कोशिश में है। अफगान समस्या के समाधान के सहारे वह अपनी छवि को सुधारना चाहता है। हालांकि अफगान सरकार ने साफ कर दिया है कि अमेरिका से पहले हमसे बातचीत करनी चाहिए और यह तभी संभव होगा जब तालिबान हिंसा का रास्ता छोड़े।

ss6066356@gmail.com

बोझ तले बचपन

बच्चे जो देश का भविष्य है, आज वे अपने बचपन की मासूमियत से कोसो दूर होते जा रहे हैं। बच्चे शिक्षा के अतिरिक्त बोझ के कारण खेलकूद व अन्य क्रिया कलापों से काफी दूर हो रहे, जिसको लेकर केंद्र सरकार ने पाठ्यक्रम में कुछ बड़े बदलाव कर बच्चों को राहत देने की योजना बनाई है। केंद्र सरकार ने नेशनल कॉउन्सिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च (एनसीईआरटी) से कहा है कि वह वर्तमान समय में पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करें कि इसमें से क्या हटाया जा सकता है। इस तरह के बदलाव से बच्चों में शारीरिक व मानसिक विकास होंगे।

asifr8795@gmail.com

ट्वीट-ट्वीट

हमें किसी से बैर नहीं, हुड़दंग करने पर किसी की खैर नहीं!!

राहुल श्रीवास्तव@upcoprahul

इस होली पर वामपंथियों और उनके ही जैसे लोगों, गैर सरकारी संगठनों की ओर से 'पानी रहित होली' की बकवास सुनने को नहीं मिली। हैरान हूं कि यह खामोशी भरा बदलाव कौन लाया?

पीयूष कुलश्रेष्ठ@ThinkersPad

कांची के शंकराचार्य श्री जयेंद्र सरस्वती जी, परंपरावादी भी थे और विद्रोही भी। उन्होंने जाति, समुदाय की सीमाएं तोड़कर गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा की।

श्री श्री रविशंकर@SriSri

मध्य प्रदेश पर कर्ज अब 1.11 लाख करोड़ से बढ़कर 1.44 लाख करोड़ रुपये हो चुका है। सरकार बेझिझक कर्जा उठा रही है, लेकिन उसका कोई परिणाम जमीन पर नही दिख रहा है– न नए स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, सड़क और कारखाने। जनता का पैसा आखिर कहां लुटाया जा रहा है?

ज्योतिरादित्य सिंधिया@JM_Scindia

आज जो हजारों युवा एसएससी और सरकारी नौकरियों में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहे हैं, वे असल में देश के उज्ज्वल भविष्य का आधार तैयार कर रहे हैं।

अनुपम@AnupamConnects

जनपथ

रोयां–रोयां रंग में सराबोर है यार,
शत्रु छोड़िए, मित्र भी दिखते रंगे सियार।
दिखते रंगे सियार छोकरे सब हुड़दंगी,
इक–दूजे को रंग पोतते साथी–संगी।
दर्द दे रहा सिर्फ मिलावट वाला खोया,
मंहगाई से रोय रहा है रोयां–रोयां।

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन.संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, **E-mail: delhi@nda.jagran.com,** R.N.I. No 50755/90 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। **वर्ष 28 अंक 227**